

साम्राज्य विस्तार

जैन भिक्षु मद्रवाहू के साथ मैसूर चला गया।
 वहीं जहाँ कनिष्क प्रथम अपनी किता-उले
 चन्द्रगुप्त मौर्य के अर्थ उल्टे द्वारा बनवाये
 मौर्य गण-चन्द्रगुप्त वस्ती। नामक उडमस्त्रिहरे
 वर्ष 298 ई० पू० में उल्लेखी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य ने
 अपने सतत प्रयासों से एक विस्तृत राज्य
 की स्थापना की। उसने उत्तर में हिमालय
 से लेकर दक्षिण में मैसूर, पूर्व में बंगाल से
 लेकर उत्तर पश्चिम में हिन्दु कुश पर्वत तथा
 पश्चिम में अरब सागर तक अपने साम्राज्य का
 विस्तार किया। अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, पंजाब
 सिंध, कश्मीर, बंगाल, सौराष्ट्र, मालवा तथा दक्षिण में
 मैसूर का विशाल मु-भाग उसके साम्राज्य के
 अन्तर्गत आता था। पाटलिपुत्र उसके साम्राज्य की
 राजधानी थी।

चन्द्रगुप्त मौर्य का अन्त
 चन्द्रगुप्त मौर्य के अन्तर्गत चन्द्रगुप्त
 मौर्य ने 322 ई० पू० से 298 ई० पू० तक कुल 24 वर्ष
 सफलता पूर्वक शासन किया। जैन साहित्य के
 अनुसार अपने जीवन काल के अन्तिम दिनों में राजकाज
 अपने पुत्र को सौंप दिया और जैन धर्म स्वीकार कर